प्रथम बुद्ध सन्देश

(धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्तं)

भिक्षु धर्मरक्षित

Downloaded from http://dhamma.digital/

प्रथम बुद्ध सन्देश

भिक्षु धर्मरक्षित

Dhamma.Digital

प्रकाशक :

भिक्षु धर्मज्योति

Downloaded from http://dhamma.digital/

प्रकाशक :
भिक्षु धर्मज्योति

तृतीय संस्करण ५००

Dhamma.Digital

मुद्रक:
शाक्य प्रेस
ॐबहाल, काठमाडौं, नेपाल ।
फोन: २–१३६०४

Downloaded from http://dhamma.digital/

धम्मचक्क प्पवत्तन सुत्तं

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

धम्मचक्क पवत्तन सुत्तं

(धर्मचक्र-प्रवर्तन-सूत्र)

(१) एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा, बाराणसियं विहरति इसिपतने मिगदाये। तत्र खो भगवा पञ्चवग्गिये भिक्खू आमन्तेसि:—

[१] ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में विहार करते थे। वहाँ भगवान् ने पञ्चवर्गीय भिक्षुओं को सम्बोधित किया—

Dhamma.Digital

द्वे अन्ता

(२) "द्वे' मे भिक्खवे! अन्ता पब्बजितेन न सेवितब्बा,—कत मे द्वे? (१) यो चायं कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगो हीनो, गम्मो, पोथुज्जनिको. अनरियो, अनत्थसंहितो; (२) यो चायं अत्तकिलमथानुयोगो

Downloaded from http://dhamma.digital/

दुक्खो, अनरियो, अनत्थसंहितो। एते खो भिक्खवे ! उभो अन्ते अनुपगम्म मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा, चक्खु-करणी, ञाणकरणी, उपसमाय, अभिञ्ञाय, सम्बोधाय, निब्बानाय संवत्तति।

दो अन्त

[२] "भिक्षुओं ! इन दो अन्तों (=चरम बातों) को प्रव्रजितों को नहीं करना चाहिये– (१) जो यह हीन, ग्राम्य, पृथक् जनों के योग्य, अनार्य (–सेवित), अनर्थों से युक्त कामवासनाओं में काम-सुख लिप्त होना है, और (२) जो यह दुःखमय, अनार्य (–सेवित), अनर्थों से युक्त आत्म-पीडन (=कायक्लेश) में लगना है। भिक्षुओं ! इन दोनों अन्तों (=चरम बातों) में न जाकर तथागत ने मध्यम मार्ग को जाना है. (जो कि) आँख देनेवाला, ज्ञान करनेवाले, शान्ति के लिये, अभिज्ञा के लिये, सम्बोधि (=परमज्ञान) के लिये, निर्वाण के लिये है।

Downloaded from http://dhamma.digital/

मज्झिमा पटिपदा

(१) कतमा च सा भिक्खवे ! मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा, चक्खुकरणी, ञाणकरणी, उपसमाय, अभिञ्ञाय, सम्बोधाय, निब्बानाय संवत्तति ? अयमेव अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, सेय्यथीदं—(१) सम्मादिट्ठि (२) सम्मासङ्कप्पो (३) सम्मावाचा (४) सम्माकम्मन्तो (५) सम्माआजीवो (६) सम्मावायामो (७) सम्मासति (८) सम्मासमाधि । अयं खो सा भिक्खवे ! मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा, चक्खुकरणी, ञाणकरणी, उपसमाय, अभिञ्ञाय, सम्बोधाय, निब्बानाय संवत्तति ।

मध्यम मार्ग

[३] भिक्षुओं ! तथागत ने कौन सा मध्यम मार्ग जाना है (जो कि) आँख देनेवाला, ज्ञान करने-

Downloaded from http://dhamma.digital/

वाला, शान्ति के लिये, अभिज्ञा के लिये, सम्बोधि के लिये, निर्वाण के लिये है। यही आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग, जैसे कि– (१) सम्यक् दृष्टि (२) सम्यक् सङ्कल्प (३) सम्यक् वचन (४) सम्यक् कर्मान्त (५) सम्यक् आजीविका (६) सम्यक् व्यायाम (=प्रयत्न) (७) सम्यक् स्मृति (८) सम्यक् समाधि। भिक्षुओं! इस मध्यम मार्ग को तथागत ने जाना है (जो कि) आँख देनेवाला, ज्ञान करनेवाला, शान्ति के लिये, अभिज्ञा के लिये, सम्बोधि के लिये, निर्वाण के लिये है।

चत्तारि अरियसच्चानि

(चार आर्य-सत्य)

१–दुक्खं अरियसच्चं

(४) इदं खो पन भिक्खवे! दुक्खं अरियसच्चं–जातिपि दुक्खा, जरापि दुक्खा, व्याधिपि दुक्खो, मरणम्पि दुक्खं, अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो, पियेहि विप्पयोगो

Downloaded from http://dhamma.digital/

दुक्खो, यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं, संखित्तेन पञ्चुपादा नक्खन्धा पिदुक्खा★ ।

१–दुःख आर्य सत्य

[४] भिक्षुओ ! यह दुःख आर्य-सत्य है– जन्म भी दुःख है, जरा (=बुढापा) भी दुःख है, रोग भी दुःख है, मृत्यु भी दुःख है, अप्रियों से संयोग (=मिलन) दुःख है, प्रियों से वियोग दुःख है, इच्छा होने पर किसी (वस्तु) का नहीं मिलना भी दुःख है । संक्षेप में पाँच उपादान स्कन्ध★ दुःख है ।

२–दुक्ख समुदयं अरियसच्चं

(५) इदं खो पन भिक्खवे ! दुक्खसमुदयं अरियसच्चं–यायं तण्हा पोनोब्भविका नन्दिराग सहगता तत्र-तत्राभिनन्दिनी, सेय्य-

★ रूप, वेदना, सञ्ञा, सङ्खारा, विञ्ञाणं–एते पञ्चुपादानक्खन्धा वुच्चन्ति ।

रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान–ये पाँच उपादान-स्कन्ध कहे जाते है ।

Downloaded from http://dhamma.digital/

थीदं–(१) कामतण्हा (२) भवतण्हा (३) विभवतण्हा।

२–दुःख-समुदय आर्य सत्य

[५] भिक्षुओं! यह दुःख-समुदय आर्य सत्य है–यह जो फिर-फिर जन्म करानेवाली, प्रीति और राग से युक्त, उत्पन्न हुए स्थानों में अभिनन्दन करानेवाली तृष्णा है, जैसे कि (१) काम-तृष्णा (२) भव-तृष्णा (=जन्म-सम्बन्धी तृष्णा) (३) विभव-तृष्णा (उच्छेद की तृष्णा)।

३–दुक्ख निरोधं अरियसच्चं

(६) इदं खो पन भिक्खवे! दुक्ख-निरोधं अरियसच्चं–यो तस्सा येव तण्हाय असेसविराग–निरोधो, चागो, पटिनिस्सग्गो, मुत्ति, अनालयो।

३–दुःख-निरोध आर्य सत्य

[६] भिक्षुओं! यह दुःख-निरोध आर्य सत्य है-जो उसी तृष्णा सर्वथा विराग है, निरोध (=रुक

Downloaded from http://dhamma.digital/

जाना), त्याग, प्रतिनिस्सर्ग [=निकास], मुक्ति [=छुटकारा], लीन न होना है ।

४—दुक्ख निरोधगामिनि पटिपदा अरियसच्चं

(७) इदं खो पन भिक्खवे ! दुक्ख-निरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं—अय-मेव अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, सेय्यथीदं—(१) सम्मादिट्ठि (२) सम्मासङ्कप्पो (३) सम्मावाचा (४) सम्माकम्मन्तो (५) सम्मा-आजीवो (६) सम्मा वायामो (७) सम्मा-सति (८) सम्मा समाधि ।

४—दुःख-निरोध-गामिनी-प्रतिपदा आर्य सत्य

[७] भिक्षुओं ! यह दुःख-निरोध-गामिनी प्रति-पदा आर्य सत्य है—यही आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग जैसे कि [१] सम्यक् दृष्टि [२] सम्यक् संकल्प

Downloaded from http://dhamma.digital/

(३) सम्यक् वचन (४) सम्यक् कर्मान्त (५) सम्यक् आजीविका (६) सम्यक् व्यायाम (७) सम्यक् स्मृति (८) सम्यक् समाधि ।

चतुन्नं अरियसच्चानं तिपरिवट्ट-ञाणदस्सनं

(८) (१) 'इदं दुक्खं अरियसच्चन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि । तं खो पनिदं 'दुक्खं अरियसच्चं परिञ्ञेय्यन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि । तं खो पनिदं 'दुक्खं अरियसच्चं परिञ्ञातन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको

Downloaded from http://dhamma.digital/

उदपादि ।

चार आर्य सत्यों का तीहरा ज्ञान दर्शन

(८) 'यह दुःख आर्य सत्य है'– भिक्षुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । यह दुःख आर्य सत्य परिज्ञेय है'– भिक्षुओं ! यह मुझे पहले न सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । 'यह दुःख आर्य सत्य परिज्ञात है'–भिक्षुओं ! यह मुझे पहले न सुने गये धर्मों में आंख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ ।

(९) (२) 'इदं दुक्खसमुदयं अरिय-सच्चन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि । तं खो पनिदं 'दुक्खसमुदयं अरियसच्चं पहातब्बन्ति' मे भिक्खवे !

Downloaded from http://dhamma.digital/

पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं 'दुक्खसमुदयं अरियसच्चं पहीनन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि ।

(९) 'यह दुःख समुदय आर्य सत्य है'–भिक्षुओं! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। यह दुःख समुदय आर्य सत्य प्रहातव्य (=त्याज्य=छोडने योग्य) है'– भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। 'यह दुःख समुदय आर्य सत्य प्रहीण (=दूर) हो गया'–भिक्षुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ ।

Downloaded from http://dhamma.digital/

(१०) 'इदं दुक्खनिरोधं अरियसच्चन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं दुक्खनिरोधं अरियसच्चं 'सच्छिकातब्बन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं दुक्खनिरोधं अरियसच्चं 'सच्छिकतन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि।

(१०) 'यह दुःख निरोध आर्य सत्य है'—भिक्षुओं! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। 'यह दुःख निरोध आर्य सत्य

Downloaded from http://dhamma.digital/

'साक्षात् करना चाहिये'–भिक्षुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। 'यह दुःख निरोध आर्य सत्य 'साक्षात् कर लिया'। भिक्षुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ।

(११) 'इदं दुक्खनिरोधगामिनि पटिपदा अरियसच्चन्ति'– मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं 'भावेतब्बन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि। आलोको उदपादि। तं खो पनिदं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं 'भावितन्ति' मे

Downloaded from http://dhamma.digital/

भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि ।

[११] 'यह दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा आर्य सत्य है'–भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । 'यह दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा आर्य सत्य भावना करना चाहिये'–भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । 'यह दुःख निरोध-गामिनी प्रतिपदा आर्य सत्य भावना कर लिया गया'–भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ ।

[१२] यावकीवञ्च मे भिक्खवे ! इमेसु चतूसु अरियसच्चेसु एवं तिपरिवट्टं द्वादसाकारं यथाभूतं ञाणदस्सनं न सुविसुद्धं अहोसि, नेव तावाहं भिक्खवे ! सदेवके

Downloaded from http://dhamma.digital/

लोके समारके सब्रम्हुके सस्समण-ब्राम्ह-णिया पजाय सदेवमनुस्साय, अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धोति पच्चञ्ञासिं।

[१२] भिक्षुओ! जब तक कि इन चार आर्य सत्यों का ऐसे तेहरा बारह प्रकार का यथार्थ विशुद्ध ज्ञान-दर्शन नहीं हुआ, तब तक मैंने भिक्षुओ! यह दावा नहीं किया कि—'देवों-सहित, मार-सहित, ब्रह्मा-सहित सभी लोक में, देव-मनुष्य-सहित, श्रमण-ब्राह्मण-सहित सभी प्रजा (=प्राणी) में, सर्वोत्तम सम्यक् सम्बोधि (=परम-ज्ञान) को मैंने जान लिया।'

[१३] यतो च खो मे भिक्खवे! इमेसु चतूसु अरियसच्चेसु एवं तिपरिवट्टं द्वाद-साकारं यथाभूतं ञाणदस्सनं सुविसुद्धं अहोसि, अथाहं भिक्खवे! सदेवके लोके समारके सब्रम्हके सस्समण-ब्राम्हणिया पजाय सदेवमनुस्साय अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धोति पच्चञ्ञासिं। ञाणञ्च पन मे दस्सनं उदपादि, अकुप्पा मे चेतोविमुत्ति,

Downloaded from http://dhamma.digital/

अयमन्तिमा जाति, नत्थिदानि पुनब्भवो'ति ।"

[१३] भिक्षुओ ! जब इन चार आर्य सत्यों का ऐसे तेहरा बारह प्रकार का यथार्थ विशुद्ध ज्ञान-दर्शन हुआ, तब मैंने भिक्षुओ ! यह दावा किया कि 'देवों-सहित, मार-सहित, ब्रह्मा-सहित, सभी लोक में, देव-मनुष्य-सहित, श्रमण-ब्राह्मण-सहित सभी प्रजा (=प्राणी) में सर्वोत्तम 'सम्यक् सम्बोधि (=परम ज्ञान) को मैंने जान लिया। मुझे ज्ञान-दर्शन उत्पन्न होगया, मेरी चेतोविमुक्ति=चित्त का मुक्त होना। अचल है, यह अन्तिम जन्म है, फिर अब जन्म लेना नहीं है।"

[१४] इदमवोच भगवा अत्तमना पञ्चवग्गिया भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति ।

[१४] भगवान ने यह कहा। सन्तुष्ट हो पञ्चवर्गीय भिक्षुओं ने भगवान के कथन का अभिनन्दन किया।

Downloaded from http://dhamma.digital/

धम्मानुभावो

(धर्म का आनुभाव)

(१५) इमस्मिञ्च पन वेय्याकरणस्मिं भञ्ञमाने आयस्मतो कोण्डञ्ञस्स विरजं वीतमलं धम्मचक्खुं उदपादि—'यं किञ्चि-समुदयधम्मं सब्बन्तं निरोध धम्मन्ति'।

(१५) इस व्याख्यान (=व्याकरण) के कहे जाने पर आयुष्मान कौण्डिन्य को, "जो कुछ उत्पन्न होने वाला है, वह सब नाशवान् है, यह परिशुद्ध, विमल धर्म-चक्षु उत्पन्न हुआ।

(१६) पवत्तिते पन भगवता धम्मचक्के भुम्मा देवा सद्दमनुस्सावेमुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुणा वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

(१६) भगवान के धर्म-चक्र को प्रवर्तित करने (=चलाने) पर भूमि पर रहने वाले देवताओं ने शब्द किया—"भगवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

(१७) भुम्मानं देवानं सद्दं सुत्वा चातुम्महाराजिका देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं अप्पतिवत्तियं ~~पवत्तितं~~ समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

(१७) भूमि पर रहने वाले देवताओं के शब्द को सुनकर चातुर्महाराजिक देवताओं ने शब्द किया—"भगवान ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

(१८) चातुम्महाराजिकानं देवानं सद्दं सुत्वा तावतिंसा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

(१८) चातुर्महाराजिक देवताओं के शब्द को सुनकर त्रायस्त्रिंश देवताओं ने शब्द किया—"भगवान ने यह वाराणसी के ऋषिपत्तन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवत, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।

(१९) तावतिंसानं देवानं सद्दं सुत्वा यामा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

(१९) त्रायस्त्रिंश देवताओं के शब्द को सुनकर यामा देवताओं ने शब्द किया—"भगवान ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

(२०) यामानं देवानं सद्दं सुत्वा तुस्सिता देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं अप्पवतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

(२०) यामा देवताओं के शब्द को सुनकर तुषित देवताओं ने शब्द किया—"भगवान ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

(२१) तुस्सितानं देवानं सद्दं सुत्वा निम्मानरति देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

(२१) तुषित देवताओं के शब्द को सुनकर निर्माणरति देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्मचक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

(२२) निम्मानरतीनं देवानं सद्दं सुत्वा परनिम्मितवसवत्ती देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तर धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

(२२) निर्माणरति देवताओं के शब्द को सुनकर परनिर्मितवशवर्ती देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

(२३) परनिम्मितवसवत्तीनं देवानं सद्दं सुत्वा ब्रम्हपारिसज्जा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

(२३) परनिर्वितवशवर्ती देवताओं के शब्द को सुनकर ब्रह्मपारिषद देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

(२४) ब्रम्हपारिसज्जानं देवानं सद्दं सुत्वा ब्रम्हपुरोहिता देवा सद्दमनुस्सावेसुं— "एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(२४) ब्रह्मपारिषद् देवताओं के शब्द को सुनकर ब्रह्मपुरोहित देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता ।"

(२५) ब्रम्हपुरोहितानं देवानं सद्दं सुत्वा महाब्रम्हा देवा सद्दमनुस्सावेसुं— "एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन

Downloaded from http://dhamma.digital/

वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(२५) ब्रह्मपुरोहित देवताओं के शब्द को सुनकर महाब्रह्मा देवताओं ने शब्द किया–'यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता ।"

(२६) महाब्रम्हानं देवानं सद्दं सुत्वा परित्तामा देवा सद्दमनुस्सावेसुं–"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(२६) महाब्रह्मा देवताओं के शब्द को सुनकर परित्ताभ देवताओं ने शब्द किया–"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता ।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

(२७) परित्ताभानं देवानं सद्दं सुत्वा अप्पमाणाभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं– "एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(२७) परित्ताभ देवताओं के शब्द को सुनकर अप्रमाणाभ देवताओं ने शब्द किया–"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता ।"

(२८) अप्पमाणाभानं देवानं सद्दं सुत्वा आभस्सरा देवा सद्दमनुस्सावेसुं–"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

(२८) अप्रमाणाभ देवताओं के शब्द को सुनकर आभास्वर देवताओं ने शब्द किया–"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

(२८) आभस्सरानं देवानं सद्दं सुत्वा परित्तसुभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं–"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

(२९) आभास्वर देवताओं के शब्द को सुनकर परित्रशुभ देवताओं ने शब्द किया–"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

(३०) परित्तसुभानं देवानं सद्दं सुत्वा अप्पमाणासुभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

(३०) परित्तशुभ देवताओं के शब्द को सुनकर अप्रमाणशुभ देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

(३१) अप्पमाणासुभानं देवानं सद्दं सुत्वा सुभकिण्हका देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिग-दाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पति-वत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा

Downloaded from http://dhamma.digital/

मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(३१) अप्रमाणशुभ देवताओं के शब्द को सुनकर शुभकृत्स्न देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता ।

(३२) सुभकिण्हकानं देवानं सद्दं सुत्वा वेहप्फमा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(३२) शुभकृत्स्न देवताओं के शब्द को सुनकर वृहत्फल देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण,

Downloaded from http://dhamma.digital/

देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

(३३) वेहप्फलानं देवानं सद्दं सुत्वा अविहा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

(३३) वृहत्फल देवताओं के शब्द को सुनकर अविहा देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषितन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

(३४) अविहानं देवानं सद्दं सुत्वा आतप्पा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पवतिवत्तियं समणेन

Downloaded from http://dhamma.digital/

वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(३४) अविहा देवताओं के शब्द को सुनकर अतव्य देवताओं ने शब्द किया–"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता ।"

(३५) आतप्पानं देवानं सद्दं सुत्वा सुद्दस्सा देवा सद्दमनुस्सावेसुं–"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(३५) अतप्य देवताओं के शब्द को सुनकर सुदर्श देवताओं ने शब्द किया–"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता,

Downloaded from http://dhamma.digital/

मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता ।"

(३६) सुद्दस्सानं देवानं सद्दं सुत्वा सुदस्सी देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता वाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तर धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(३६) सुदर्श देवताओं के शब्द को सुनकर सुदर्शी देवताओं ने शब्द किया—"भगवान ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता ।"

(३७) सुदस्सीनं देवानं सद्दं सुत्वा अकनिट्ठका देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन

Downloaded from http://dhamma.digital/

वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रम्हुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।"

(३७) सुदर्शी देवताओं के शब्द को सुनकर अकनिष्ठक देवताओं ने शब्द किया–"यह भगवान ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता ।"

(३८) इतिह तेन खणेन तेन मुहुत्तेन याव ब्रम्हलोका सद्दो अब्भुग्गच्छि । अयञ्च दससहस्सी लोकधातु सङ्कम्पि, सम्पकम्पि, सम्पवेधि । अप्पमाणो च उलारो ओभासो लोके पातुरहोसि अतिक्कम्म देवानं देवानुभावन्ति ।

(३८) इस प्रकार उसी क्षण में, उसी मुहुर्त्त में यह शब्द ब्रह्मलोक तक पहुँच गया और यह दस सहस्त्री ब्रह्माण्ड काँप उठा, सम्प्रकम्पित हो गया, हिल उठा । देवताओं के तेज से भी बढकर बहुत भारी, विशाल प्रकाश लोक में उत्पन्न हुआ ।

Downloaded from http://dhamma.digital/

भगवतो उदान
(भगवान का उदान)

(३९) अथ खो भगवा उदानं उदानेसि– "अञ्ञासि वत भो कोण्डञ्ञो, अञ्ञासि वत भो कोण्डञ्ञो'ति।" इति हि' दँ आयस्मतो कोण्डञ्ञस्स अञ्ञातकोण्डञ्ञो' त्वेव नामं अहोसी'ति।☛

धम्मचक्क प्पवत्तनसुत्तं निट्ठितं।

(३९) तब भगवान् ने उदान कहा– "अहा! कौण्डिन्य ने जान लिया (=अज्ञात) अहा! कौण्डिन्य ने जान लिया।" इसीलिये आयुष्मान् कौण्डिन्य का 'अज्ञात कौण्डिन्य' ही नाम पडा।

धर्म-चक्र-प्रवर्तन सूत्र समाप्त।

☛ पञ्चवग्गिया भिक्खू नाम–आयस्मा कोण्डञ्ञो, आयस्मा वप्पो, आयस्मा भद्दियो, आयस्मा महानामो, आयस्मा अस्सजी चाति।

पञ्चवर्गीय भिक्षुओं के नाम है– आयुष्मान् कोण्डन्य, आयुष्मान् वप्प, आयुष्मान् भद्दिय, आयुष्मान् महानाम और आयुष्मान् अश्वजित।

Downloaded from http://dhamma.digital/

अनत्तलक्खन सुत्तं

(अनात्म-लक्षण-सूत्र)

(१) एवं मे सुतं—एकं समयं भगवा; बाराणसिपं विहरति इसिपतने मिगदाये। तत्र खो भगवा पञ्चवग्गिये भिक्खू आमन्तेसि।'

(१) ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में विहार करते थे। वहाँ भगवान् ने पञ्चवर्गीय भिक्षुओं को सम्बोधित किया।

(२) रूपं भिक्खवे! अनत्ता। रूपञ्च हिदं भिक्खवे! अत्ता अभविस्स, नयिदं रूपं आबाधाय संवत्तेय्य। लब्भेथ च रूपे 'एवं मे रूपं होतु', 'एवं मे रूपं मा अहोसीति'। यस्मा च खो भिक्खवे! रूपं अनत्ता, तस्मा रूपं आबाधाय संवत्तति। न च लब्भति रूपे 'एवं मे रूपं होतु', 'एवं मे रूपं मा अहोसीति'।

Downloaded from http://dhamma.digital/

(२) भिक्षुओं ! रूप अनात्मा है भिक्षुओं ! यदि रूप आत्मा होता, तो यह दुःख का कारण नहीं बनता, और रूप में 'मेरा रूप 'ऐसा होवे, मेरा रूप ऐसा न होवे, यह पाया जाता। चूँकि भिक्षुओं ! रूप अनात्मा है, इसलिए रूप दुःख का कारण होता है ओर रूप में 'मेरा रूप ऐसा न होवे, यह नहीं पाया जाता।

(३) वेदना भिक्खवे ! अनत्ता। वेदना हिदं भिक्खवे ! अत्ता अभविस्स, नयिदं वेदना आबाधाय संवत्तेय्य। लब्भेथ च वेदनाय 'एवं मे वेदना होतु', एवं मे वेदना मा अहोसीति'। यस्मा च खो भिक्खवे ! वेदना अनत्ता, तस्मा वेदना आबाधाय संवत्तति। न च लब्भति वेदनाय 'एवं मे वेदना होतु', 'एवं मे वेदना मा अहोसीति'।

(३) भिक्षुओं ! वेदना अनात्मा है। भिक्षुओं ! यदि वेदना आत्मा होती, तो यह दुःख का कारण नहीं बनती और वेदना में 'मेरी वेदना ऐसी होवे, मेरी वेदना ऐसी नहोवे' यह पाया जाता। चूँकि भिक्षुओं ! वेदना अनात्मा है, इसलिए वेदना दुःख का

Downloaded from http://dhamma.digital/

कारण होती है ओर वेदना में 'मेरी वेदना ऐसी होवे, मेरी वेदना ऐसी न होवे' यह नहीं पाया जामा ।

(४) सञ्ञा भिक्खवे ! अनत्ता...पे... सङ्खारा भिक्खवे ! अनत्ता । सङ्खारा च च हिदं भिक्खवे ! अत्ता अभविस्सिसु, नयिमे सङ्खारा आबाधाय संवत्तेय्युं । लब्भेथ च सङ्खारेसु 'एवं मे सङ्खारा होन्तु', 'एवं मे सङ्खारा मा अहेसुन्ति' । यस्मा च खो भिक्खवे ! सङ्खारा अनत्ता, तस्मा सङ्खारा आबाधाय संवत्तन्ति । न च लब्भति सङ्खारेसु 'एवं मे सङ्खारा होन्तु', 'एवं मे सङ्खारा मा अहेसुन्ति' ।

(४) भिक्षुओं ! संज्ञा अनात्मा है....। भिक्षुओं ! संस्कार अनात्मा है । भिक्षुओं ! यदि संस्कार आत्मा होते, तो यह दुःख के कारण नहीं बनते, और संस्कारों में मेरे संस्कार ऐसे होवें, मेरे संस्कार ऐसे न होवें' यह पाया जाता । चूँकि भिक्षुओं ! संस्कार अनात्मा है, इसलिए संस्कार दुःख के कारण होते है, और

Downloaded from http://dhamma.digital/

संस्कारों में 'मेरे संस्कार ऐसे होवें, मेरे संस्कार ऐसे न होवें' यह नहीं पाया जाता।

(५) विञ्ञाणं भिक्खवे ! अनत्ता। विञ्ञाणञ्च हिदं भिक्खवे ! अत्ता अभविस्स, नयिदं विञ्ञाणं आबाधाय संवत्तेय्य। लब्भेथ च विञ्ञाणे 'एवं मे विञ्ञाणं होतु' 'एवं मे विञ्ञाणं मा अहोसीति'। यस्मा च खो भिक्खवे ! विञ्ञाणं अनत्ता, तस्मा विञ्ञाणं आबाधाय संवत्तति। न च लब्भति विञ्ञाणे 'एवं मे विञ्ञाणं होतु', 'एवं मे विञ्ञाणं मा अहोसीति'।

(५) भिक्षुओं! विज्ञान अनात्मा है। भिक्षुओं! यदि विज्ञान आत्मा होता, तो यह दुःख का कारण नहीं बनता, और विज्ञान में 'मेरा विज्ञान ऐसा होवे, मेरा विज्ञान ऐसा न होवे' यह पाया जाता। चूँकि भिक्षुओं ! विज्ञान अनात्मा है' इसलिये विज्ञान दुःख का कारण होता है और विज्ञान में 'मेरा विज्ञान ऐसा होवे, मेरा विज्ञान ऐसा न होवे' यह नहीं पाया जाता।

Downloaded from http://dhamma.digital/

(६) तं किँ मञ्ञथ भिक्खवे। रूपं निच्चं वा अनिच्चं वाति ?

अनिच्चं भन्ते !

यम्पनानिच्चं दुक्खं वा सुखं वाति ?

दुक्खं भन्ते !

यम्पनानिच्चं दुक्खं विपरिणामधम्मं, कल्लन्तु तं समनुपस्सितुं एतं मम, एसोहमस्मि, एसो मे अत्ताति ?

नोहेतं भन्ते !

(६) तो क्या मानते हो भिक्षुओं ! रूप नित्य है या अनित्य?

अनित्य भन्ते !

जो अनित्य है, वह दुःख है या सुख ?

दुःख भन्ते !

जो अनित्य, दुःख और विकार को प्राप्त होनेवाले है, क्या उसके लिए यह समझना उचित है –'यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा आत्मा है ?

नहीं भन्ते !

Downloaded from http://dhamma.digital/

(७) बेदना···पे···सञ्ञा···पे···सङ्खारा ···पे···विञ्ञाण निच्चं वा अनिच्चं वाति ?

अनिच्चं भन्ते !

यम्पनानिच्चं दुक्खं वा तं सुखं वाति !

दुक्खं भन्ते !

यम्पनानिच्चं दुक्खं विपरिणामधम्मं, कल्लन्तु तं समनुपस्सितुं एतं मम, एसोहमस्मि, एसो मे अत्ताति ?

नोहेतं भन्ते !

(७) वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान नित्य या अनित्य है ?

अनित्य भन्ते !

जो अनित्य है, वह दुःख है या सुख ?

दुःख भन्ते !

जो अनित्य दुःख और विकार को प्राप्त होनेवाला है क्य, उसके लिए यह समझना उचित है –'यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा विज्ञान है ?

नहीं भन्ते !

Downloaded from http://dhamma.digital/

(८) तस्मातिह भिक्खवे ! यं किञ्चि रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा, ओलारिकं वा सुखुमं वा हीनं वा पणीतं वा, यं दूरे सन्तिके वा, सब्बं रूपं नेतं मम, नेसोहमस्मि, न मेसो अत्तातिएवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दट्ठब्बं ।

(८) इसलिए भिक्षुओं! जो कुछ भी भूत, भविष्य, वर्तमान सम्बन्धी, भीतरी या बाहरी, स्थूल या सूक्ष्म, अच्छा या बुरा, दूर या निकट का रूप है, सभी रूप न मेरा है, न मैं हूँ, न वह मेरा आत्मा है—इस प्रकार ठीक तौर से समझ कर देखना चाहिए ।

(९) ये केचि वेदना, ये केचि सञ्ञा, ये केचि सङ्खारा यं किञ्चि विञ्ञाणं अतीतानागत पच्चुपन्नं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा, ओलारिकं वा सुखुमं वा, हीनं वा पणीतं वा, यं दूरे सन्तिके वा, सब्बं विञ्ञाणं नेतं मम, नेसो हमस्मि, न

Downloaded from http://dhamma.digital/

नमेसो अत्ताति-एवमेतं यथा भूतं सम्मञ्ञाय दट्ठब्बं ।

(९) जो कुछ वेदना, जो कुछ संज्ञा, जो कुछ संस्कार, जो कुछ बिज्ञान भूत, भविष्य, वर्तमान सम्बन्धी, भीतरी या बाहरी, स्थूल या सूक्ष्म, अच्छा या बुरा, दूर या निकट का है, सभी विज्ञान न मेरा है, न मैं हूँ, न वह मेरा आत्मा है—इस प्रकार ठीक तौर से समझकर देखना चाहिए ।

(१०) एवं पस्सं भिक्खवे ! सुतवा अरियसावको रूपस्मिम्पि निब्बिन्दति, वेदनायपि निब्बिन्दति, सञ्ञायपि निब्बिन्दति, सङ्खारेसुपि निब्बिन्दति, विञ्ञाणस्मिम्पि निब्बिन्दति, निब्बिन्दं विरज्जति, विरागा विमुच्चति, विमुत्तस्मिं विमुत्तमिति ञाणं होति । खीणा जाति, वुसितं ब्रम्हचरियं, कतं करणीयं, नापरं इत्थत्तायाति पजानातीति ।

Downloaded from http://dhamma.digital/

(१०) भिक्षुओं ! ऐसा देखने वाला विद्वान आर्य-श्रावक रूप में निर्वेद करता है, वेदना, संज्ञा, संस्कार, बिज्ञान में निर्वेद करता है। निर्वेद करने से विरक्त हो जाता है। बिरक्त होने से विमुक्त हो जाता है। बिमुक्त हो जाने पर 'विमुक्त हो गया' ऐसा ज्ञान है। और वह ऐसा जानता हैं– 'जन्म क्षीण हो गया (= आवागमन नष्ट हो गया), ब्रह्मचर्यवास पूरा हो गया। करना का=सो कर लिया, अब यहाँ कुछ करने को शेष नहीं है।'

(११) इदमवोच भगवा। अत्तमना पञ्चवग्गिया भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति।

(११) भगवान् ने यह कहा। सन्तुष्ट हो पञ्चवर्गीय भिक्षुओं ने भगवान के कहे का अभिनन्दन किया।

(१२) इमस्मिञ्च पन वेय्याकरणस्मिं भञ्ञमाने पञ्चवग्गियानं भिक्खूनं अनुपादाय आसवेहि चित्तानि विमुच्चिंसु।

Downloaded from http://dhamma.digital/

(१२) इस धर्मोपदेश के कहे जाने पर पञ्च-वर्गीय भिक्षुओं का चित्त उपादान-रहित आश्रवों (=मलों) से मुक्त हो गया।

अनत्तलक्खणसुत्तं निट्ठितं।

अनात्मा-लक्षण-सूत्र समाप्त।

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

पुर्ण बहादुर सिंह ठेकल

२१ गीत

Downloaded from http://dhamma.digital/